ORIGINAL RESEARCH PAPER

Political Science

सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण: बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं का एक अध्ययन

KEY WORDS:

पवन कुमार बलाई' शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर
*Corresponding Author

डॉ. अरविंद कुमार वर्मा सह आचार्य, समाजशास्त्र विभाग श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय सीकर, राजस्थान

1. प्रस्तावना

सामाजिक परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत सामाजिक संस्थाओं, मान्यताओं, सामाजिक संरचना, मूल्यों और सामाजिक संबंधों में समय के साथ परिवर्तन होता है। औद्योगीकरण, नगरीयकरण, शिक्षा–प्रसार, लोकतान्त्रिक मूल्यों और वैश्वीकरण के प्रभाव ने आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान की है। समाज के विभिन्न वर्गों पर इन परिवर्तनों का प्रभाव पड़ा, विशेषतः महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिला है। आजादी के बाद भी लम्बे समय तक महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक और राजनितिक प्रतिनिधित्व सीमित था, परन्तु आधुनिक विकास प्रक्रियाओं, संवैधानिक प्रावधानों और सरकारी नीतियों के परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति और भूमिका में सुधार हुआ है।

सामाजिक परिवर्तन केवल एक संरचनात्मक परिवर्तन नहीं है, अपितु यह व्यक्तियों और समूहों की सामाजिक स्थिति और भूमिकाओं में होने वाले परिवर्तन को अभिव्यक्त करता है। गिडेन्स (2009) के अनुसार, सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक व्यव्हार के प्रतिमाओं में होने वाले दीर्घकालिक परिवर्तनों को संदर्भित करता है। इसी प्रकार, योगेंद्र सिंह (2000) ने भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन को परंपरा और आधुनिकता के अन्तर्सम्बन्धों के माध्यम से समझाया है। भारत में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, सामाजिक जागरूकता, आर्थिक–राजनीतिक भागीदारी सामाजिक परिवर्तन के आयाम निर्धारित करते हैं।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि महिला सशक्तिकरण सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण आयाम है। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनितिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, महिलाओं को समान अवसर, संसाधन और अधिकार प्रदान करने से है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, महिला सशक्तिकरण का आशय लैंगिक समानता स्थापित करने और महिलाओं की क्षमताओं का विकास करने की प्रक्रिया से है। नायला कबीर (1999) ने सशक्तिकरण को उन व्यक्तियों की क्षमता में वृद्धि के रूप में परिभाषित किया है जिन्हें पहले जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने के अवसर प्राप्त नहीं थे। इस दृष्टि से शिक्षा, रोजगार, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक–राजनीतिक भागीदारी महिला सशक्तिकरण के प्रमुख संकेतक हैंक्षमता में वृद्धि के रूप में परिभाषित किया है जिन्हें पहले जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने के अवसर प्राप्त नहीं थे।

आधुनिक भारत में, महिला सशक्तिकरण के आयाम सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुंचे हैं। भारतीय समाज में अनुसूचित जाति की महिलाओं की स्थिति सामान्य महिलाओं की तुलना में हमेशा से कमतर रही है क्योंकि उनके जातिगत और लैंगिक दोनों प्रकार के भेदभाव का सामना करना पड़ता है। अनुसूचित जाति की महिलाओं के अनुभव आर्थिक असमानता और सामाजिक बहिष्करण जैसे बहुआयामी तत्वों से प्रभावित होते हैं। यद्यपि शिक्षा, आरक्षण, सरकारी योजनाओं और रोजगार के अवसरों में वृद्धि से उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं, फिर भी आने चुनौतियां आज भी उनके सामने विधमान हैं। इसीलिए, अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति को समझने के लिए, प्रस्तुत अध्ययन बलाई जाति, जो की राजस्थान और उत्तर प्रदेश में पायी जाने वाली एक प्रमुख अनुसूचित जाति है, का सामाजिक विश्लेषण करते हुए, बलाई जाति की महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और महिला सशक्तिकरण में भूमिका की समीक्षा करने का प्रयास करेगा।

ऐतिहासिक दृष्टि से बलाई समुदाय सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित वर्गों में शामिल रहा है। परंपरागत रूप से बलाई समुदाय कृषि, श्रम, बुनाई और अन्य श्रमप्रधान कार्यों के माध्यम से आजीविका का निर्वहन करता आया है। परन्तु, सामाजिक परिवर्तन के फलस्वरूप बदलती आर्थिक–सामाजिक परिस्थितियों, शिक्षा के विस्तार और रोजगार में वृद्धि के कारण बलाई समुदाय की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। साथ ही, समुदाय की महिलाओं ने भी इन अवसरों का भरपूर उपयोग करते हुए अपनी आर्थिक–सामाजिक स्थिति को मजबूत किया है। आज अनेकों महिलाएं, कृषि कार्यों के अतिरिक्त, सरकारी एवं गैर–सरकारी क्षेत्रों, स्वरोजगार, मनरेगा और सेवा क्षेत्र में कार्यरत हैं। आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने न केवल परिवार की आय में योगदान दिया है, बल्कि उनकी सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित किया है।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं की आर्थिक-सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना तथा रोजगार एवं आर्थिक सहभागिता के माध्यम से उनके सशक्तिकरण की स्थिति का मूल्यांकन करना है। साथ ही, यह अध्ययन परिवार एवं समाज में उनकी भूमिका, निर्याणयात्मक भागीदारी और उनके सम्मुख आने वाली चुनौतियों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परिक्षण करने का प्रयास करता है। इस प्रकार, यह अध्ययन सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण के अन्तर्सम्बन्धों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

2. बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति

प्रस्तुत अध्ययन में बलाई जाति की 30 कामकाजी महिलाओं से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर उनकी शिक्षा, व्यवसाय, आय, परिवार और समाज में उनकी स्थिति तथा सामाजिक जीवन से सम्बंधित चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण ने बलाई जाति की महिलाओं की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये हैं, यद्यपि अभी भी अनेक सामाजिक–आर्थिक एवं संरचनात्मक बढ़ाएं उनके जीवन को प्रभावित कर रही हैं।

तालिका 1: उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति

शैक्षिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	8	26.7
प्राथमिक	10	33.3
माध्यमिक	6	20.0
उच्च माध्यमिक एवं उससे अधिक	6	20.0
कुल	30	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश महिलाएँ किसी न किसी स्तर तक शिक्षित हैं। सर्वाधिक 33.3 प्रतिशत महिलाएँ प्राथमिक स्तर तक शिक्षित पाई गईं। केवल 26.7 प्रतिशत महिलाएँ निरक्षर थीं। यह स्थिति दर्शाती है कि बलाई समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। शिक्षा महिलाओं में आत्मविश्वास, अधिकार–बोध तथा रोजगार प्राप्त करने की क्षमता का विकास करती है, जो महिला सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण आधार है (कबीर 1999)।

तालिका 2: व्यवसाय की प्रकृति

व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
कृषि एवं कृषि मजदूरी	12	40.0
मनरेगा एवं दिहाड़ी श्रम	8	26.7
स्वरोजगार/घरेलू उद्योग	5	16.7
निजी सेवा	3	10.0
सरकारी सेवा	2	6.6
कुल	30	100

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 40 प्रतिशत महिलाएँ कृषि एवं कृषि मजदूरी से जुड़ी हुई हैं, जबकि 26.7 प्रतिशत महिलाएँ मनरेगा तथा अन्य दिहाड़ी कार्यों में संलग्न हैं। स्वरोजगार और घरेलू उद्योगों से जुड़ी महिलाओं की संख्या भी उल्लेखनीय है। इससे स्पष्ट होता है कि बलाई महिलाओं की आर्थिक भागीदारी मुख्यतः असंगठित क्षेत्र में केंद्रित है। फिर भी रोजगार के अवसरों में विविधता सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक गतिशीलता का संकेत देती है।

तालिका 3: मासिक आय का स्तर

मासिक आय (रु.)	संख्या	प्रतिशत
3000 से कम	9	30.0
3001–6000	13	43.3
6001–9000	6	20.0
9000 से अधिक	2	6.7
कुल	30	100

आय संबंधी आंकड़ों से स्पष्ट है कि अधिकांश महिलाओं की आय निम्न एवं मध्यम श्रेणी में आती है। 43.3 प्रतिशत महिलाओं की मासिक आय 3001 से 6000 रुपये के मध्य पाई गई। यद्यपि आय का स्तर अपेक्षाकृत सीमित है, फिर भी उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उनकी आय परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान देती है। आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं की सामाजिक स्थिति और निर्णयात्मक भूमिका को सुदृढ़ करती है (सेन, 1999)।

तालिका 4: पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी

निर्णय–निर्माण में भागीदारी	संख्या	प्रतिशत
पूर्ण भागीदारी	9	30.0
आंशिक भागीदारी	15	50.0
सीमित भागीदारी	6	20.0
कुल	30	100

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 80 प्रतिशत महिलाएँ किसी न किसी रूप में पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी करती हैं। विशेष रूप से बच्चों की शिक्षा, घरेलू व्यय तथा स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण पाई गई। यह परिवर्तन महिलाओं की बढ़ती आर्थिक सहभागिता तथा सामाजिक जागरूकता का परिणाम माना जा सकता है।

सामुदायिक स्तर पर भी महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन दिखाई देता है। अनेक उत्तरदाताओं ने स्वयं सहायता समूहों, ग्राम स्तरीय बैठकों तथा सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी की जानकारी दी। इससे उनकी सामाजिक पहचान और आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। हालांकि कुछ महिलाओं ने यह भी बताया कि जातिगत पूर्वाग्रह तथा पितृसत्तात्मक सोच अभी भी उनके सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है (रेगे, 2006)।

तालिका 5: प्रमुख चुनौतियाँ

चुनौती	संख्या	प्रतिशत
दोहरा कार्यभार	22	73.3
कम आय	18	60.0
रोजगार की अनिश्चितता	16	53.3
सामाजिकध्जातिगत भेदभाव	12	40.0
स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ	10	33.3

कार्य एवं सामाजिक जीवन से संबंधित चुनौतियों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि दोहरा कार्यभार सबसे प्रमुख समस्या है। 73.3 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि रोजगार करने के बावजूद घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी मुख्यतः उन्हीं पर रहती है। इसके अतिरिक्त कम आय, रोजगार की अनिश्चितता तथा सामाजिक भेदभाव भी महत्वपूर्ण चुनौतियों के रूप में सामने आए। यह स्थिति दर्शाती है कि आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी के बावजूद महिलाओं को अभी भी समान अवसर और सामाजिक समर्थन पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पाया है।

समग्रतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन हो रहा है। शिक्षा, रोजगार और आर्थिक योगदान ने उनक आत्मविश्वास, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा निर्णय–निर्माण की क्षमता को मजबूत किया है। तथापि आर्थिक असुरक्षा, दोहरा कार्यभार, सीमित संसाधन तथा जातिगत एवं लैंगिक भेदभाव जैसी चुनौतियाँ अभी भी उनके समक्ष विद्यमान हैं। इसलिए महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षा, कौशल विकास, सामाजिक सुरक्षा तथा समान अवसरों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

3. सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण

सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण परस्पर सम्बन्धित प्रक्रियाएं हैं। सामाजिक परिवर्तन समाज की संरचना, मूल्यों और संस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों को अभिव्यक्त करता है, दूसरी ओर महिला सशक्तिकरण महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भागीदारी के विकास तथा निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करता है। आधुनिक भारत में शिक्षा–प्रसार, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, सरकायी योजनाओं और संवैधानिक अधिकारों के विस्तार ने महिलाओं की समाज में स्थिति को सुदृढ़ किया है। बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं के संदर्भ में भी यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अध्ययन में शामिल महिलाओं के अनुभवों से ज्ञात हुआ की रोजगार और शिक्षा ने उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वूर्ण भूमिका निभाई है।

शिक्षा महिला सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम मानी जाती है। अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि शिक्षित महिलाओं में अपने अधिकारों, सरकारी योजनाओं तथा सामाजिक अवसरों के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक थी। शिक्षा के जरिये महिलाओं में आत्मविश्वास का विकास होता है जिससे उनके परिवार और समाज में अपने विचार रखने का साहस मिलता है। अध्ययन में शामिल कई उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि शिक्षा के कारण उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है और वे अपने बच्चों, विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अधिक सजग हुई हैं। इसी प्रकार, रोजगार ने महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकालकर सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया है। परिणामस्वरूप, महिलाओं की सामाजिक पहचान का विस्तार हुआ है तथा वे परिवार की आर्थिक व्यवस्था में सक्रिय भागीदार बनी हैं। शिक्षा और रोजगार के संयुक्त प्रभाव ने महिलाओं की जीवन–स्थितियों में गुणात्मक परिवर्तन उत्पन्न किया है, जो सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण संकेतक है (कबीर, 1999; सिंह, 2000)।

आर्थिक आत्मनिर्भरता महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण आयाम है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ की रोजगार के अवसरों में वृद्धि ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया है। यद्यपि अधिकांश महिलाओं की आय सीमित थी, परन्तु परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में महिलाओं की आय ने एक अहम् भूमिका निभाई है। अनेक उत्तरदाताओं ने बताया कि अपनी आय होने के कारण उन्हें व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर पूर्णतः निर्भर नहीं रहना पड़ता। आर्थिक योगदान ने परिवार में उनकी स्थिति को मजबूत किया है तथा उन्हें सम्मान और स्वीकार्यता प्रदान की है। महिलाओं की आय ने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं घरेलू व्यय में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह स्थिति दर्शाती है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता केवल आय अर्जित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आत्मसम्मान तथा निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित करती है (सेन, 1999)।

निर्णय-निर्माण में भागीदारी महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण आयाम है। पारंपरिक भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका अक्सर घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती रही है, किंतु बदलती सामाजिक परिस्थितियों की वजह से इस स्थिति में परिवर्तन हुआ है। अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश महिलाओं ने बताया कि परिवार की आय में योगदान देने के कारण उनकी राय को पहले की तुलना में अधिक महत्व दिया जाने लगा है। कुछ महिलाएं आर्थिक मामलों से जुड़े निर्णयों में अपने पति और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ विचार-विमर्श में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। यह परिवर्तन महिलाओं की बढ़ती सामाजिक स्वायत्तता और पारिवारिक शक्ति-संतुलन में आ रहे बदलाव को परिलक्षित करता है (कबीर, 1999)।

सामाजिक प्रतिष्ठा और आत्मविश्वास में परिवर्तन भी महिला सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण आयाम हैं। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि रोजगार और सामाजिक सहभागिता ने महिलाओं के आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि की है। आर्थिक योगदान के कारण परिवार तथा समाज में महिलाओं के सम्मान में वृद्धि हुई है। पहले जहाँ महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती थी, वहीं अब वे आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाने के साथ–साथ सामाजिक कार्यक्रमों, स्वयं सहायता समूहों तथा सामुदायिक गतिविधियों में भी भाग ले रही हैं। इससे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन दिखाई देता है। महिलाओं को अब केवल गृहिणी के रूप में नहीं, बल्कि परिवार की आर्थिक सहयोगी और निर्णय–निर्माता के रूप में भी देखा जाने लगा है। यह परिवर्तन सामाजिक संरचना में लैंगिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है (देशपांडे, 2011; श्रीनिवास, 1966)।

समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं के जीवन में सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया निरंतर आगे बढ़ रही है। शिक्षा, रोजगार और आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उनकी सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास तथा निर्णय–निर्माण क्षमता को सुदृढ़ किया है। वहीं दूसरी ओर पितृसत्तात्मक संरचनाएँ, आर्थिक असुरक्षा और जातिगत असमानताएँ अभी भी उनके समक्ष चुनौतियों के रूप में विद्यमान हैं। अतः महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार के स्थायी अवसर, सामाजिक सुरक्षा तथा लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाली नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

4. निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं के जीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर रूप से विकसित हो रही है। शिक्षा, रोजगार और आर्थिक सहभागिता ने महिलाओं के जीवन में नए अवसरों का सृजन किया है तथा उन्हें परिवार और समाज में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम बनाया हैय तथापि यह परिवर्तन सभी स्तरों पर समान रूप से परिलक्षित नहीं होता। आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी के बावजूद अनेक महिलाएँ पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं, लैंगिक अपेक्षाओं और सीमित संसाधनों के दायरे में कार्य करने को विवश हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला सशक्तिकरण केवल रोजगार प्राप्त करने का परिणाम नहीं है, बल्कि सामाजिक स्वीकृति, निर्णयात्मक भागीदारी और अवसरों तक समान पहुँच से जुड़ी एक व्यापक प्रक्रिया है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं सशक्तिकरण को और अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

1. बलाई समुदाय की महिलाओं और बालिकाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण,

डिजिटल साक्षरता तथा रोजगारोन्मुखी कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार किया जाना चाहिए, जिससे उनकी रोजगार क्षमता और आय के अवसर बढ़ सकें।

2. स्वयं सहायता समूहों, सूक्ष्म वित्त योजनाओं तथा महिला सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने की आवश्यकता है। इससे आय के वैकल्पिक स्रोत विकसित होंगे।

3. पंचायतों, स्थानीय संस्थाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा सामुदायिक संगठनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे नेतृत्व क्षमता और सामाजिक प्रतिनिधित्व का विकास हो सके।

4. सामाजिक परिवर्तन केवल आर्थिक साधनों से संभव नहीं है। इसके लिए समुदाय स्तर पर लैंगिक समानता, बालिका शिक्षा और सामाजिक समावेशन से संबंधित जागरूकता अभियानों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

समग्र रूप से, बलाई जाति की कामकाजी महिलाओं का जीवन–संघर्ष और उपलब्धियाँ इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि सशक्तिकरण का मार्ग केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति, समान अवसरों और गरिमापूर्ण सहभागिता से होकर गुजरता है।

संदर्भ

1. कबीर, एन. (1999). 'रिसोर्सेज, एजेंसी, अचीवमेंट्सः रिफ्लेक्शन्स ऑन द मेजरमेंट ऑफ विमेन्स एम्पावरमेंट।' 'डेवलपमेंट एंड चेंज', 30(3), 435–464।
2. देशपांडे, एस. (2011). 'कॉन्टेम्परी इंडियाः ए सोशियोलॉजिकल व्यू।' पेंगुइन बुक्स इंडिया।
3. सेन, ए. (1999). 'डेवलपमेंट ऐज फ्रीडम।' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. सिंह, वाई. (2000). 'कल्चर चेंज इन इंडियाः आइडेंटिटी एंड ग्लोबलाइजेशन।' रावत पब्लिकेशन्स।
5. रेगे, एस. (2006). 'राइटिंग कास्टध्राइटिंग जेंडरः नैरेटिंग दलित विमेन्स टेस्टिमोनियोस।' जुबान।
6. श्रीनिवास, एम. एन. (1966). 'सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया।' यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।